Nāsadīyam
A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
Volume 3, Issue 1 (Jan – Dec), 2024, Pp 30-34

ललित कलाओं में संगीत की भूमिका

गीतू सैनी
सहायक प्रवक्त्री (संगीत वादन विभाग)
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ई-मेलः sainigeetu71@gmail.com
दूरभाषः 7082263267

संक्षेपिका

भारतीय परंपरा एवं संस्कृति में ललित कलाओं का स्थान सदैव से महत्त्वपूर्ण रहा है। मानवीय अभिव्यक्ति के श्रेष्ठ प्रमाण के रूप में ललित कलाएं गिनी जाती है। भारत पौराणिक ग्रंथों में मुख्य चौसठ कलाओं का उल्लेख है। 'ललित' शब्द जिसका अर्थ 'सुंदर' अथवा मनोरंजक है सौन्दर्यात्मक तथा लालित्य से पूर्ण अभिव्यक्त होने वाली कला को ललित कला कहा जाता है। ललित कला प्रत्येक पहलू में उच्चतम श्रेणी की होती है। अन्य कलाओं से ललित कला भिन्न है, क्योंकि उनमें बारंबार आनंदानुभूति की प्राप्ति होती है। यह विशेष गुण है। ललित कलाओं में भौतिक सुख से अधिक मन और हृदय को अटूट आनंद प्रदान करने के गुण है। इन कलाओं में श्रोता या दर्शक स्वयं को भूलाकर कला की रसोत्पति में लीन हो जाता है।

कुंजी शब्द-ललित कला, संगीत और नाट्य, संगीत और चित्रकला, वास्तुकला शिल्पकला।

शोधपत्र

ललित कला की अभिव्यक्ति तथा सुंदरता का आस्वादन करने हेतु विविध माध्यम की आवश्यकता होती है। इन्हीं अभिव्यक्तियों के माध्यमों के आधार पर ललित कलाओं के तीन प्रकार बनते है, प्रयोगधर्मी कला- जिसमें संगीत, नाट्य, नृत्य का समावेश होता है, साहित्य- जिसमें गद्य व पद्य साहित्य का समावेश होता है, दृश्य कला - जिसमें शिल्प एवं चित्रकला का समावेश होता है। इनके अतिरिक्त ललित कलाओं का वर्गीकरण दृश्य-श्रव्य में किया जाता है। ललित कलाओं में संगीत, नृत्य, नाट्य, साहित्य (काव्य) दृश्य-श्रव्य कलाएँ और अन्य कलाएँ वस्तुनिष्ठ कलाएँ कहलाती हैं।

प्रत्येक ललित कला में भिन्न-भिन्न घटकों का प्रयोग किया जाता है। जैसे - साहित्य में स्वर, अक्षर, छंद, संगीत में स्वर, लय, बंदिश, चित्रकला में रंग, रेखा, आकृति, नृत्य में नृत्य, नृत, भाव, शिल्प में पत्थर, मिट्टी, हथौड़ा, नाट्य में अभिनय, साहित्य, भाव। प्रत्येक ललित कला में अभिव्यक्ति के घटक भिन्न स्वरूप के पाये गए है, जिनकी सहायता से कलाकृति को अभिव्यक्ति की पूर्णता और निश्चित परिणाम प्रदान किया जा सकें। इन घटकों की सहायता से सौंदर्यात्मक, मधुरता से पूर्ण, सरल, सहज, भावपूर्ण कृति का निर्माण किया जाता है।[1]

अन्य सभी ललित कलाओं में संगीत का स्थान प्रमुख माना जाता है। संगीत 'नादब्रह्म' से जुड़ी कला है जिसमें स्वर, लय तथा नाद से सम्मिलित एक अमूर्त स्वरूप की रसोत्पत्ति का गुण समाया है। अन्य सभी कलाओं में समाने की शक्ति संगीत है। अन्य ललित कलाओं का मूलभूत आधार स्थूल स्वरूप का पाया गया है, जबकि संगीत का मूल नाद है, जो सर्वव्यापी है। संगीत भाव निष्पत्ति के लिये उत्तम कला है।

स्वरों के माध्यम से भावनिर्मिति तथा रागों के सौंदर्यात्मक पहलू को अभिव्यक्ति संगीत में किया जाता है। नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रयोगधर्मी का प्रमुख संगीत है। जिस प्रकार मनुष्य मन में भावना की मौजूदगी प्राकृतिक रूप से है, संगीत में रागभाव विशेष स्वर समूहों द्वारा प्रकट होता है। चल-अचल पदार्थों के साथ-साथ पशु-पक्षी वनस्पति भी संगीत से प्रभावित होते हैं।[2]

भाव निष्पति के साथ संगीत में गतिशीलता का भी प्राधान्य है। लय संगीत का महत्त्वपूर्ण घटक है। जैसे-जैसे संगीत में रचना की बढ़त होती है, वैसे-वैसे आनंदनुभूति भी बढ़ती है। रस व अध्यात्म के साथ जुड़ा है। संगीत के विभिन्न स्वर एवं रागों के प्रभाव के कारण मनुष्य मन में विभिन्न संवेदना का निर्माण होता है, जिसका उपयोग संगीतोपचार के लिए किया जाता है। इस प्रकार ललित कलाओं में संगीत का स्थान प्रमुख माना जाता है।

ललित कलाओं में संगीत का श्रेष्ठ कला के रूप में स्थान है तथा ललित कलाओं में अभिव्यक्ति के भेद होने के बावजूद संगीत का इनके साथ पारस्पारिक संबंध अवश्य है। आगे प्रत्येक ललित कला का संगीत के संबंध पर प्रकाश डाला गया है।

मानव सभ्यता के साथ-साथ ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ है, कलाओं में 'संगीत-कला', 'चित्र-कला' और 'काव्य-कला' विशेष महत्त्व रखती है। इनमें भी संगीत कला अधिक प्रभाव डालने वाली कला है। मनुष्य के हृदय में सोए हुए भावों को जगाने में संगीत जितना सक्षम है, उतनी और कोई विद्या नहीं है। जो कुछ चित्र से नहीं कहा जा सकता वह काव्य या भाषा से कह दिया जाता है और जिन भावों को व्यक्त करने में भाषा भी असमर्थ रहती है, उन्हें संगीत के माध्यम से आसानी से समझाया जा सकता है। लाटरी खुलने की प्रसन्नता न भाषा से व्यक्त की जा सकती है और न चित्र से। उसकी अभिव्यक्ति नाचने-कूदने और उन्मत-मन से ही संभव है। इसी प्रकार पुत्र-शोक, प्रिय-विछोह और समर्पण इत्यादि के भाव, संगीत के द्वारा शीघ्र जागृत हो जाते है।[3]

ललित कला के लिए आवश्यक है कि उनमें सौंदर्य माधुर्य, सहजता, सरलता, प्रसाद प्रवाह और ओज हों। लयात्मकता लालित्य का प्रमुख गुण है। संगीत, काव्य और चित्र-कला में ये सभी गुण पाये जाते हैं। कुछ विद्वानों ने इन तीनों कलाओं को एक समान माना है, जबकि अधिकांश विद्वानों के मत में संगीत सर्वश्रेष्ठ कला है। वास्तव में कलाओं का लक्ष्य मनुष्य को भौतिक सुख-दुख से ऊपर उठा कर, अलौकिक आनन्द प्राप्त कराना है। उसी को रसानुभूति की चरम अवस्था कहा जाता है। सभी कलाएँ मन को शाँति, आनन्द और प्रेरणा प्रदान करती है। संगीत-कला में एक विशेष गुण और भी है कि वह मनुष्य के अतिरिक्त पशु-पक्षियों को भी आकर्षित करती है। अन्य ललित कलाओं में यह सामर्थ्य नहीं। काव्य, चित्र, वास्तु-कला एवं शिल्प-कला, बुद्धि के संयोग से ही भावों का उत्कर्ष करने में सफल होती है।[4]

शॉर्पिन हॉवर का कहना है - "केवल संगीत ही ऐसी कला है जो श्रोताओं से सीधा सम्बन्ध रखती है। इसे किसी भी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती। गीत, वाद्य और नृत्य, तीनों संगीत-कला के अन्तर्गत आते हैं। इनके सम्मिलित प्रयोग से संगीत में भाव संप्रेक्षण की शक्ति और बढ़ जाती है। आंगिक चेष्टा, शब्द और स्वर, इन तीनों की सम्मिलित शक्ति, संगीत-कला को अन्य किसी भी कला की अपेक्षा अधिक समर्थ बना देती है। इसीलिये संगीत को ब्रह्मानन्द-सहोदर आनन्द प्रदान करने वाली कला कहते हैं

। वास्तव में देखा जाए तो चित्र, काव्य और संगीत, तीनों ललित-कलाएँ एक-दूसरे से अलग होते हुए भी, आपस में इसी प्रकार जुड़ी हुई है - जैसे - कपड़ा और सूत । संगीतकार धुन बनाते समय किसी चित्र की कल्पना करता है, कवि अपने काव्य की रचना करते समय अमूर्त स्वरों को छन्द का वाहन बनाता है । चित्रकार या शिल्पकार शब्द के आशय से विषयवस्तु को अपने मस्तिष्क में कोई आकार देता है और तब उसे मूर्त रूप प्रदान करता है । इन सबके अतिरिक्त कभी-कभी संगीत, शब्दों के आधार पर धुन का निर्माण करता है । कवि किसी चित्र की कल्पना करके काव्य का सृजन करता है और चित्रकार काव्य सुन या किन्हीं स्वर-लहरियों में खो कर अपनी कृति का निर्माण करता है । इसलिए कभी किसी चित्र में काव्य फूट पड़ता है । किसी काव्य-धारा से संगीत उमड़ने लगता है तो कही कोई राग या रागिनी सजीव होकर सामने खड़ी हो जाती है।[5]

संगीत काव्य और चित्र तीनों ललित-कलाओं में, केवल एक चीज़ सामान्य है और वह है लय । लय पर ही तीनों कलाओं का सौंदर्य अवलंबित होता है । संगीत में लय उसका प्रधान तत्त्व है इसलिए लय की सम्पूर्ण शक्ति संगीत कला में निहित रहती है इस दृष्टि से भी संगीत-कला अन्य ललित-कलाओं में अग्रणी हो जाती है। जिसे अपने अस्तित्व के लिए किसी भौतिक उपादान की आवश्यकता नहीं होती । संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि ललित-कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोपरि हैं, क्योंकि वह गतिशील है, आनन्दानुभूति कराने और भावाभिव्यक्ति में सक्षम है चर और अचर पर प्रभाव डालने में समर्थ है लोकरंजक है और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने वाला है ।[6]

ललित कलाओं में संगीत का स्थान

संगीत सबसे प्राचीन कला है । जब मानव ने भाषा नहीं सीखी थी तो भी किसी न किसी रूप में संगीत था आदि-मानव भी अपने उद्गार; खुशी आदि भी गुनगुनाकर ही व्यक्त करता होगा । जैसे पक्षियों को चहचहाना कोई नहीं सिखाता, शिशु को रोना-हँसना कोई नहीं सिखाता, उसी प्रकार मानव को गाना नाचना स्वतः ही आता है। यह बात अलग है कि उसका रूप परिष्कृत न हो । ऐसी कल्पना की जा सकती है कि अन्य कलाओं का जन्म संगीत के बाद हुआ। ललित कलाओं में संगीत के स्थान को हम कुछ तत्त्वों के आधार पर सुनिश्चित कर सकते हैं।[7]

(1) **भौतिक सामग्री तथा उपकरणों की आवश्यकता:** इस आधार पर कलाओं को क्रम में रखने से मदद मिलती है। वास्तुकला में पत्थर ईंट, मिट्टी लकड़ी आदि उपकरणों की आवश्यकता होती है ।

(2) **चल अचल के आधार पर:** कला की श्रेष्ठता का मापदंड है उसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव स्थापत्य एक ऐसी कला है । जो पूर्ण रूप से स्थिर है, अचल है ।

(3) **नवीनीकरण:** समय परिवर्तनशील है, और भिन्न व्यक्तियों की कल्पनाएं व रूचियां भिन्न होती है । स्थापत्य कला में जो भवन एक बार बन जाता है उसे बार-बार तोड़कर बनवाना संभव नहीं हे ।

(4) **प्रभाव की दृष्टि से:** प्रभाव के क्षेत्र के आधार पर अगर हम देखें तो पता चलता है कि वास्तुकला, मूर्तिकला, तथा चित्रकला का प्रभाव केवल मनुष्य तक ही सीमित है ।

(5) भावाभिव्यक्ति की शक्ति : सभी कलाएं मानव के भावों की अभिव्यक्ति होती है । अतः जो कला अधिक से अधिक भावों को अभिव्यक्त करे वही श्रेष्ठ है ।[8] संगीत श्रेष्ठतम कला है । अपने प्रभाव, व्यापकता सूक्ष्मता, महत्ता के कारण ललित कलाओं रूपी आकाश का तारा संगीत है । लौकिक अलौकिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करने तथा प्रदान करने की जितनी शक्ति संगीत में है । उतनी अन्य किसी कला में नहीं है ।[9] ललित कला अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण एक-दूसरे से भिन्न है, वहीं एक-दूसरे के साथ कई रूप से संबंध भी स्थापित करती है । अन्य कलाओं के साथ संगीत के पारस्परिक संबंध से यह स्पष्ट है कि, संगीत एक पूर्ण कला के रूप में सभी कलाओं में प्रमुख तो है ही, किन्तु किसी न किसी रूप में अन्य ललित कलाओं से जुड़ी हुई भी है ।[10]

संगीत कला का मानव मन पर प्रभाव :मानव भावनाशील प्राणी है। युग-युग से वह सांसारिक वस्तुओं व कार्यो के साथ अपने हृदय में रागात्मक संबंध बनाता रहा है। प्राचीन काल से, जब अन्य ललित कलाओं की उत्पत्ति नही हुई थी, उस समय भी आदि मानव अपने भावों को संगीत द्वारा ही अभिव्यक्त करता था। अदाहरण के लिए शिकारी अवस्था में मनुष्य जब शिकार करके आता था, तो वह अपनी प्रसन्नता एवं उल्लास की अभिव्यक्ति गान एवं नृत्य के साथ किया करता था[11], जिस कला में बाह्य उपकरण जितने कम होंगे वह उतनी ही अधिक सफलतापूर्वक मानव मन की अन्तरतम अनुभूतियों को व्यक्त कर पाने में सक्षम होगी।

संगीत में न केवल मन और मस्तिष्क को प्रभावित करने की क्षमता है, बल्कि यह शारीरिक रोगों के नदान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संगीत द्वारा भावाभिव्यक्ति ही नहीं, वरन् ऐसे रोगों की चिकित्सा करना भी संभव है।, जिनका जन्म मानसिक व भावनात्मक असन्तुलन के कारण होता है। अनिद्रा, उच्च रक्त चाप सिरदर्द व हृदय संबंधी अनेक रोगों का उपचार आज संगीत द्वारा सफलता पूर्वक किया जा रहा है।[12]

संगीत मनुष्य के सुख-दुःख, वेदना, पीड़ा, प्रसन्नता प्रेम आदि सभी मानवीय भावों की अभिव्यक्ति करता है। गति, माधुर्य और लयात्मकता का समन्वय संगीत को सभी कलाओं से अधिक प्रभावशील और व्यापक बनाता हे। संगीत में मन को एकाग्र करने की शक्ति होती हे। क्योंकि संगीत की रचना मात्र संयोजन के आधार पर की जाती है।[13]

संदर्भ सूची:-

1. डॉ० अनया यत्रे, डॉ० विजय पटेल, संगीत विविधा, पृ० 29
2. डॉ० अनया यत्रे, डॉ० विजय पटेल, संगीत विविधा, पृ० 30-31
3. वीर राम अवतार, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ०
4. वसंत, संगीत विशारद, पृ० 260
5. डॉ० अशोक कुमार यमन, संगीत रत्नावली, पृ०
6. वसंत, संगीत विशारद, पृ० 261
7. डॉ० राम नारायण त्रिपाठी, संगीत मैनुअल, पृ० 168
8. डॉ० मृत्युंजय शमा्र, संगीत मैनअुल, पृ० 169

9. डॉ॰ गर्ग, लक्ष्मी नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका, पृ॰ 72
10. डॉ॰ अनया यत्रे, डॉ॰ विजय पटेल, संगीत विविधा, पृ॰ 33
11. शांता पांडे, संगीत, पृ॰ 39
12. डॉ॰ लोकेश शर्मा, स्वाति शर्मा, संगीत सरिता, पृ॰ 141
13. डॉ॰ लोकेश शर्मा, स्वाति शर्मा, संगीत सरिता, पृ॰ 144